वह क्या है जो राजनीति प्रबंधक नहीं जानते: तर्कसंगत और राजनीतिक प्रबंधकों का टकराव

श्री एस.पी. गुप्ता, XYZ लिमिटेड (जो भारत सरकार उद्योग मंत्रालय के अधीनस्थ एक फैक्ट्री है) के महाप्रबंधक. को उसी मंत्रालय के आधीन एक दूसरे कारखाने में स्थानांतरित कर दिया गया। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में पिछले कारखाने का परिवर्तन मैनेजमेंट में बहुत नाम कमाया था। एक फैक्ट्री को बदलने के अपने अनुभव के प्रति आश्वस्त वह इस असाइनमेंट से वह परिवर्तन के एक और अभ्यास की उत्साह से प्रतीक्षा कर रहे थे, जो मिलती जुलती प्रबंधकीय चुनौतियों का सामना करते दिख रहे थे: मसलन अनुशासनहीनता रोकना, समय की पाबंदी बहाल करना और कारखाने के भौतिक और वित्तीय प्रदर्शन में वृद्धि करना. और इसके बाद स्टाफ के प्रोत्साहन और सुविधाओं में वृद्धि करना ।

2 वर्ष की अल्प अवधि में ही वह ऐसा करने में सफल भी हो गये। परन्तु इससे पहले कि वह इस असाधारण उपलब्धि हासिल करने का आनंद लेना शुरू कर सके और उपलब्धि और ख्याति प्राप्त कर पाते, उन्हें जीवन का सबसे बड़ा झटका लगा, जब उन्हें बेदर्दी से हटा कर कंपनी के मुख्यालय में एक महत्वहीन पद पर भेज दिया गया। यह कदम कुछ यूनियन नेताओं की हड़ताल के कारण उठाया गया था जिन्हे राज्य और केंद्र में सरकार का राजनीतिक समर्थन और आश्रय प्राप्त था । महाप्रबंधक की दलीलें, कि कारखाने के प्रदर्शन में कितना सुधार हुआ और इससे कर्मचारियों को जो लाभ हुआ, उसके बारे में अध्यक्ष और बोर्ड के कार्यकारी सदस्यों ने कुछ नहीं सुना, जिन्होंने माननीय कैबिनेट मंत्री (जो उस मंत्रालय के प्रभारी थे जिसके अंतर्गत यह कंपनी आती थी), को सुझाव दिया था, कि फैक्ट्री का धीरे-धीरे निजीकरण किया जाए। मंत्री महोदय ने तदनुसार इस आशय का संसद में वक्तव्य दे दिया था।

इस वक्तव्य का उपयोग एक यूनियन नेता द्वारा स्थानीय चनाव में श्रमिकों का समर्थन जुटाने के लिए कर लिया गया, यह दलील दे कर कि जनरल मैनेजर फैक्ट्री को मल्टीनेशनल कंपनियों को बेचने की कोशिश कर रहा है,जो उनकी नौकरियों को खतरे में डाल देंगी। हालांकि जनरल मैनेजर का इस से कोई वास्ता ही नहीं था।

जनरल मैनेजर ने पूरे घटनाक्रम को याद करते हुए कहा "उस यूनियन नेता को

अस्पताल में महिला स्टाफ को परेशान करते हुए पकड़ा गया था। मेरे मुख्य प्रबंधक नेयूनियन नेता की सेवाएँ स्वयं ही निलंबित कर दी, और दो सप्ताह विदेश में प्रशिक्षण पर चले गए। मैंने इस मसले पर पर मुख्या प्रबंधक के लौटने पर बात करने की सोची थी। लेकिन उससे पहले ही राज्य में चुनाव की घोषणा हो गई और एक स्थानीयनेता ने अपनी पत्नी की उम्मीदवारी के लिए हमारे कर्मचारी संघ के उस नेता से मदद और समर्थन मांगा। यह सब क्या हो रहा है इसका मुझे कोई एहसास तक न था। नेता सत्तारूढ़ पार्टी के कर्मचारी संघ का था।

मैंने सबसे विनती की; मेरे राज्य के मुख्यमंत्री से, अध्यक्ष और बोर्ड के कार्यकारी सदस्यों को अपने प्रदर्शन की दलीलें दी। लेकिन यह सब व्यर्थ था। शायद मुझे अधिक सावधान रहना चाहिए था अपने आपअपने आप पर नियंत्रण रखना चाहिए अपने पूर्ववर्ती लोगों की तरह फैक्ट्री में अनुशासंनहीनता और निहित स्वार्थ सिद्धि चलने देना चाहिए था। अंततः मुझे क्या मिला? मेरी कोई गलती नहीं होने पर लात मार कर बाहर कर दिया। मैंने कारखाने के भौतिक और वित्तीय प्रदर्शन में जो सुधार किया और इससे कर्मचारियों को जो लाभ हुआ, उन सेवाओं का यही मूल्य" गुप्ता जीने व्यथिक होते हुए बात समाप्त की।

प्रश्न:

गुप्ता जीको क्या करना चाहिए था?